रविवार 21 मार्च, 2021

विषय — सामग्री

स्वर्ण पाठः भजन संहिता 42 : 11
भजन संहिता 17 : 28

"हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं।"

उत्तरदायी अध्ययन: **रोमियो 8 : 1-6**

1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।
5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।
8 और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।
9 परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

पाठ उपदेश

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

बाइबल

1. भजन संहिता 8 : 1, 4-6, 9

1 हेयहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है! तू ने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है।
4 तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?
5 क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है।
6 तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।
9 हे यहोवा, हे हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है॥

2. अय्यूब 12 : 10

10 उसके हाथ में एक एक जीवधारी का प्राण, और एक एक देहधारी मनुष्य की आत्मा भी रहती है।

3. भजन संहिता 56 : 4, 13

4 परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा, परमेश्वर पर मैं ने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूंगा। कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है?
13 क्योंकि तू ने मुझ को मृत्यु से बचाया है; तू ने मेरे पैरों को भी फिसलने से बचाया है, ताकि मैं ईश्वर के साम्हने जीवतों के उजियाले में चलूं फिरूं?

4. सभोपदेशक 3 : 14, 15

14 मैं जानता हूं कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्थिर रहेगा; न तो उस में कुछ बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया जा सकता है; परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि लोग उसका भय मानें।
15 जो कुछ हुआ वह इस से पहिले भी हो चुका; जो होने वाला है, वह हो भी चुका है; और परमेश्वर बीती हुई बात को फिर पूछता है।

5. लूका 4 : 14, 15, 38-40

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई।
15 और वह उन की आराधनालयों में उपदेश करता रहा, और सब उस की बड़ाई करते थे॥

38 वह आराधनालय में से उठकर शमौन के घर में गया और शमौन की सास को ज्वर चढ़ा हुआ था, और उन्होंने उसके लिये उस से बिनती की।
39 उस ने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डांटा और वह उस पर से उतर गया और वह तुरन्त उठकर उन की सेवा टहल करने लगी॥
40 सूरज डूबते समय जिन जिन के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए, और उस ने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।

6. लूका 5 : 12, 13, 18-25

12 जब वह किसी नगर में था, तो देखो, वहां कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य था, और वह यीशु को देखकर मुंह के बल गिरा, और बिनती की; कि हे प्रभु यदि तू चाहे हो मुझे शुद्ध कर सकता है।
13 उस ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ और कहा मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा: और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा।
18 और देखो कई लोग एक मनुष्य को जो झोले का मारा हुआ था, खाट पर लाए, और वे उसे भीतर ले जाने और यीशु के साम्हने रखने का उपाय ढूंढ़ रहे थे।
19 और जब भीड़ के कारण उसे भीतर न ले जा सके तो उन्होंने कोठे पर चढ़ कर और खप्रैल हटाकर, उसे खाट समेत बीच में यीशु के साम्हने उतरा दिया।
20 उस ने उन का विश्वास देखकर उस से कहा; हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।
21 तब शास्त्री और फरीसी विवाद करने लगे, कि यह कौन है, जो परमेश्वर की निन्दा करता है? परमेश्वर का छोड़ कौन पापों की क्षमा कर सकता है?
22 यीशु ने उन के मन की बातें जानकर, उन से कहा कि तुम अपने मनों में क्या विवाद कर रहे हो?
23 सहज क्या है? क्या यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ, और चल फिर?
24 परन्तु इसलिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे हुए से कहा), मैं तुझ से कहता हूं, उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।
25 वह तुरन्त उन के साम्हने उठा, और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर, परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ अपने घर चला गया।

7. लूका 8 : 41, 42 (*से1st* .), 51-56

41 और देखो, याईर नाम एक मनुष्य जो आराधनालय का सरदार था, आया, और यीशु के पांवों पर गिर के उस से बिनती करने लगा, कि मेरे घर चल।
42 क्योंकि उसके बारह वर्ष की एकलौती बेटी थी, और वह मरने पर थी: जब वह जा रहा था, तब लोग उस पर गिरे पड़ते थे॥

51 घर में आकर उस ने पतरस और यूहन्ना और याकूब और लड़की के माता-पिता को छोड़ और किसी को
अपने साथ भीतर आने न दिया।
52 और सब उसके लिये रो पीट रहे थे, परन्तु उस ने कहा; रोओ मत; वह मरी नहीं परन्तु सो रही है।
53 वे यह जानकर, कि मर गई है, उस की हंसी करने लगे।
54 परन्तु उस ने उसका हाथ पकड़ा, और पुकारकर कहा, हे लड़की उठ!
55 तब उसके प्राण फिर आए और वह तुरन्त उठी; फिर उस ने आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।
56 उसके माता-पिता चकित हुए, परन्तु उस ने उन्हें चिताया, कि यह जो हुआ है, किसी से न कहना॥

8. 1 कुरिन्थियों 15: 50-57

50 हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न
विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।
51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।
52 और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे
अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और हम बदल जाएंगे।
53 क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन
ले।
54 और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन
जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।
55 हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?
56 हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है।
57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।

9. मत्ती 5 : 48

48 इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 468 : 8-15

सवाल। — होने का वैज्ञानिक कथन क्या है?

उत्तर। —पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है। आत्मा अमर सत्य है; मामला नश्वर त्रुटि है। आत्मा ही वास्तविक और शाश्वत है; पदार्थ असत्य और लौकिक है। आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी छवि और समानता है। इसलिए आदमी भौतिक नहीं है; वह आध्यात्मिक है।

2. 275 : 1-9

पदार्थ के पास खोने के लिए कोई जीवन नहीं है, और आत्मा कभी नहीं मरती है। मन की साझेदारी से सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान मन की अनदेखी होगी। इससे पता चलता है कि ईश्वर, आत्मा में पदार्थ की उत्पत्ति नहीं हुई और वह शाश्वत नहीं है। इसलिए सामग्री न तो पर्याप्त है, न ही जीवित है, और न ही बुद्धिमान है। दिव्य विज्ञान का प्रारंभिक बिंदु यह है कि भगवान, आत्मा, संपूर्ण है और न ही कोई अन्य शक्ति है और न ही मन — वह ईश्वर प्रेम है, और इसलिए वह दिव्य सिद्धांत है।

3. 372 : 1 (सामग्री)-17

सामग्री बीमार नहीं हो सकती है, और मन अमर है। नश्वर शरीर केवल भौतिक में मन की एक गलत नश्वर धारणा है। जिसे आप सामग्री कहते हैं वह मूल रूप से समाधान में प्राथमिक त्रुटि थी, प्रारंभिक नश्वर मन, - मिल्टन द्वारा "अराजकता और पुरानी रात।" इस नश्वर मन के बारे में एक सिद्धांत यह है कि इसकी संवेदनाएं मनुष्य को पुन: उत्पन्न कर सकती हैं, रक्त, मांस और हड्डियों का निर्माण कर सकती हैं। होने का विज्ञान, जिसमें सभी दिव्य मन, या भगवान और उसका विचार है, इस युग में स्पष्ट होगा, लेकिन इस विश्वास के लिए कि सामग्री मनुष्य का माध्यम है, या वह आदमी अपने स्वयं के सन्निहित विचार में प्रवेश कर सकता है, खुद को बांधता है उनकी अपनी मान्यताएं, और उनकी संबंधों की सामग्री का नाम और उन्हें दिव्य कानून का नाम देते हैं।

जब मनुष्य क्रिश्चियन साइंस का प्रदर्शन करता है, तो वह एकदम सही होगा। वह न तो पाप कर सकता है, न पीड़ित, मामले के अधीन हो सकता है, और न ही परमेश्वर के कानून की अवज्ञा कर सकता है। इसलिए वह स्वर्ग में स्वर्गदूतों के रूप में होगा।

4. 391 : 7-28

रोग के उद्दीप्त या उन्नत चरणों में अंधे और शांत प्रस्तुत करने के बजाय, उनके खिलाफ विद्रोह में वृद्धि। इस विश्वास को समाप्त करें कि आप संभवत: एक ही असहनीय दर्द का सामना कर सकते हैं, जिसे मन की शक्तियों

द्वारा खारिज नहीं किया जा सकता है, और इस तरह आप शरीर में दर्द के विकास को रोक सकते हैं। भगवान का कोई भी कानून इस परिणाम में बाधा नहीं डालता है। यह अशुभ लेकिन अपने पापों के लिए पीड़ित करने के लिए त्रुटि है। मसीह, या सत्य, अन्य सभी पीड़ितों को नष्ट कर देगा, और आपके अपने पापों के लिए वास्तविक पीड़ा पाप के रूप में अनुपात में बंद हो जाएगी।

न्याय कानून का नैतिक संकेत है। अन्याय कानून की अनुपस्थिति की घोषणा करता है। जब शरीर को यह कहना चाहिए, "मैं बीमार हूं," कभी भी दोषी नहीं होना चाहिए। चूंकि सामग्री बात नहीं कर सकती, इसलिए इसे नश्वर मन होना चाहिए जो बोलता है; इसलिए एक विरोध के साथ अंतरंगता को पूरा करें। यदि आप कहते हैं, "मैं बीमार हूँ," आप दोषी मानते हैं। तब आपका विरोधी आपको न्यायाधीश (नश्वर मन) के पास पहुंचा देगा, और न्यायाधीश आपको सजा देगा। बीमारी के पास खुद को कुछ घोषित करने और उसके नाम की घोषणा करने की कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। नश्वर मन ही अकेला वाक्य करता है। इसलिए बीमारी के साथ अपनी शर्तें बनाएं, और सिर्फ अपने लिए और दूसरों के लिए बनें।

5. 393 : 16-4

अपनी समझ में दृढ़ रहें कि दिव्य मन शासन करता है, और यह कि विज्ञान में मनुष्य ईश्वर की सरकार को दर्शाता है। इस बात का कोई डर न रखें कि सामग्री दर्द कर सकती है, सूजन हो सकती है, और किसी भी प्रकार के नियम के परिणामस्वरूप सूजन हो सकती है, जब यह स्व-स्पष्ट है कि सामग्री में कोई दर्द नहीं हो सकता है और न ही सूजन हो सकती है। आपका शरीर किसी पेड़ के तने की तुलना में तनाव या घावों से अधिक पीड़ित नहीं होगा, जिसे आप तोड़ते हैं या बिजली के तार जो आप खींचते हैं, क्या यह नश्वर मन के लिए नहीं थे।

जब यीशु ने घोषणा की कि "शरीर का दिया आंख है", निश्चित रूप से इसका मतलब है कि प्रकाश मन पर निर्भर करता है, दृश्य जीवों का गठन जटिल हास्य, लेंस, मांसपेशियों, परितारिका और पुतली पर नहीं।

मनुष्य कभी बीमार नहीं होता, क्योंकि मन बीमार नहीं होता और न ही पदार्थ हो सकता है। एक गलत धारणा दोनों बहकानेवाला और प्रलोभन, पाप और पापी, बीमारी और उसके कारण है। बीमारी में शांत होना अच्छा है; आशावादी होना भी बेहतर है; लेकिन यह समझना कि बीमारी वास्तविक नहीं है और यह सत्य इसकी वास्तविक वास्तविकता को नष्ट कर सकता है, सबसे अच्छा है, इस समझ के लिए सार्वभौमिक और सही उपाय है।

6. 368 : 20-31

वह जीवन शारीरिक परिस्थितियों पर आकस्मिक नहीं है, जब हम सीखते हैं कि जीवन और मनुष्य इस शरीर से बचे हैं। न तो बुराई, बीमारी, और न ही मृत्यु आध्यात्मिक हो सकती है, और उनमें भौतिक विश्वास किसी के आध्यात्मिक विकास के अनुपात में गायब हो जाता है। क्योंकि पदार्थ की कोई चेतना या अहंकार नहीं है, यह कार्य नहीं कर सकता है; इसकी स्थितियां भ्रम हैं, और ये गलत स्थितियां सभी प्रतीत होने वाली बीमारी का स्रोत हैं। पदार्थ के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, और आप मानते हैं कि मृत्यु दर (और इसलिए रोग) वास्तव में एक आधार है। पदार्थ के अस्तित्व से इनकार करें, और आप भौतिक परिस्थितियों में विश्वास को नष्ट कर सकते हैं।

7. 369 : 5-13

जिस अनुपात में मनुष्य को सभी वस्तुएं मनुष्य के रूप में खो देती हैं, उसी अनुपात में मनुष्य इसका स्वामी बन जाता है। वह तथ्यों की एक दिव्य भावना में प्रवेश करता है, और यीशु के धर्मशास्त्र को समझने के रूप में बीमारों को ठीक करने, मृतकों को ऊपर उठाने और लहर पर चलने के रूप में प्रदर्शित करता है। इन सभी कर्मों से यीशु का विश्वास इस बात पर है कि सामग्री भौतिक है, यह विश्वास है कि यह जीवन का मध्यस्थ या अस्तित्व के किसी भी रूप का निर्माणकर्ता हो सकता है।

8. 151 : 18 (*वह*)-21

रक्त, हृदय, फेफड़े, मस्तिष्क का जीवन, ईश्वर से कोई लेना-देना नहीं है। वास्तविक मनुष्य का प्रत्येक कार्य ईश्वरीय मन द्वारा संचालित होता है।

9. 125: 31-2 (*से**1st**.*)

इस प्रकार यह मामला आखिरकार एक नश्वर विश्वास से अधिक कुछ भी साबित नहीं होगा, पूरी तरह से एक व्यक्ति को इसके कथित जैविक क्रिया या अस्तित्व के माध्यम से प्रभावित करने के लिए अपर्याप्त है।

10. 249 : 1-11

आइए विज्ञान को स्वीकार करते हैं, भाव-गवाही के आधार पर सभी सिद्धांतों को त्यागें, अपूर्ण मॉडल और भ्रामक आदर्श छोड़ दें; और इसलिए हमें एक ईश्वर, एक मन, और वह एक परिपूर्ण, उत्कृष्टता के अपने मॉडल का निर्माण करने दें।

भगवान के "नर और मादा" को प्रकट होने दें। आइए हम आत्मा की दिव्य ऊर्जा को महसूस करें, हमें जीवन के नएपन में लाएं और किसी भी नश्वर और भौतिक शक्ति को नष्ट करने में सक्षम न होने को

पहचानें। आइए हम आनन्दित हों कि हम दैवीय शक्तियों के अधीन हैं। होने का सही विज्ञान ऐसा है। जीवन या ईश्वर का कोई अन्य सिद्धांत, भ्रमपूर्ण और पौराणिक है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव

करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6